Bareli Se Madina (Hindi)

रिसाला नं. 37

# बरेली से मदीना

- मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द बरेली से मदीना 05
- फांसी घर से अपने घर तक 07
- मुश्किल कुशा का दीदार 08
- बा ब-र-कत चवन्नी 10
- क़ैद से छूट तो गए.....! 11
- बारिश बरसने लगी 14
- मज़दूर शहज़ादा 15



शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

**नोट :** अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

# *(बरेली से मदीना)*

येह रिसाला (बरेली से मदीना)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा :** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

**मक-त-बतुल मदीना**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

# बरेली से मदीना

**शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर ब निय्यते सवाब येह रिसाला ( 20 सफ़ह्हात ) पूरा पढ़ कर अपनी दुन्या व आख़िरत का भला कीजिये ।**

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**ह़ज़रते उबय्य** बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त **दुरूद ख़्वानी** में सर्फ़ करूंगा । तो **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे । (ترمذی ج٤ص٢٠٧حدیث٢٤٦٥دار الفکر بیروت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**येह** उन दिनों की बात है जब मैं बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े खारादर में वाक़ेअ़ ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मद शाह दूल्हा बुख़ारी सब्ज़ वारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی के मज़ार शरीफ़ से मुल्ह़क़ा ह़ैदरी मस्जिद में ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते मौलाना **मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का **मु-तबर्रक इमामा शरीफ़** सर पर सजा कर नमाज़े **फ़ज्र** पढ़ाया करता

था । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक वलिय्ये कामिल का इ़मामा शरीफ़ बारहा मेरे हाथों और सर से मस हुवा है । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे हाथों और सर को जहन्नम की आग नहीं छूएगी । और जब हाथों और सर को न छूएगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सारा ही बदन मह़फ़ूज़ रहेगा । दर अस्ल बात येह है कि मु-तज़क्करा ह़ैदरी मस्जिद में आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ़लिमे शरीअ़त, वाक़िफ़े असरारे ह़क़ीक़त, पीरे त़रीक़त मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن के ख़लीफ़ए मजाज़ मद्दाहुल ह़बीब, साह़िबे क़िबालए बख़्शिश ह़ज़रते मौलाना जमीलुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के फ़रज़न्दे अरजुमन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़मीदुर्रह़मान क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى इमामत फ़रमाते थे । चूंकि मस्जिद से आप का दौलत ख़ाना तक़रीबन छ सात किलो मीटर दूर था लिहाज़ा फ़ज्र की इमामत की मुझे सआ़दत मिलती थी और उन का हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वाला इमामा शरीफ़ मुझे नसीब हो जाता, जिस से मैं ब-र-कतें ह़ासिल किया करता । एक बार ह़ज़रते मौलाना ह़मीदुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُالْمَنَّان ने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़ज़ाइल बयान करते हुए मुझ से फ़रमाया : मैं उन दिनों छोटा बच्चा था और मुझे अच्छी त़रह़ याद है कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझ से भी और हर बच्चे से "आप" कह कर ही गुफ़्त-गू फ़रमाते थे, डांटना, झाड़ना और तू तुकार आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मिज़ाजे मुबारक में न था, एक जुमा'रात को मैं बरेली शरीफ़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के काशानए रह़मत पर ह़ाज़िर था कि कोई साह़िब मिलने आए और वोह वक़्त आ़म मुलाक़ात का नहीं था लेकिन वोह मिलने पर मुसिर थे । चुनान्चे मैं

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ास कमरे में पैग़ाम देने चला गया मगर कमरे में तो कुजा पूरे मकान में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहीं नज़र नहीं आए ।

हम ह़ैरान थे कि आख़िर कहां गए, इसी शशो पन्ज में सब खड़े थे कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अचानक अपने कम्रए ख़ास से बरआमद हुए, सब ह़ैरान रह गए और पूछने लगे कि जब हम ने तलाश किया तो आप कहीं नज़र न आए मगर फिर आप अपने ही कमरे से बाहर तशरीफ़ लाए इस में क्या राज़ है ? लोगों के पैहम इसरार पर इर्शाद फ़रमाया : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं हर जुमा'रात को इस वक़्त अपने इसी कमरे या'नी **बरेली से मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िरी देता हूं ।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*ह़रम है उसे साह़ते हर दो [2] आ़लम !*
*जो दिल हो चुका है शिकारे मदीना*

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## क़ुत्बे मदीना की गवाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल थे । इन पर आक़ाए मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुसूसी करम था । **बरेली शरीफ़ से मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी का एक और ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ मुला-ह़ज़ा हो । चुनान्चे साकिने

मदीना अलहाज मुह़म्मद आ़रिफ़ ज़ियाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि एक बार हुज़ूर **क़ुत़्बे मदीना** सय्यिदी व मुर्शिदी व मौलाई ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : येह उन दिनों की बात है जब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बक़ैदे ह़यात थे, मैं एक बार सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार पर ह़ाज़िर हुवा । सलातो सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द "बाबुस्सलाम" पहुंचा, वहां से अचानक मेरी नज़र सुनह्री जालियों की त़रफ़ चली गई तो क्या देखता हूं कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के **मुवा-जहा** शरीफ़ के सामने दस्त बस्ता ह़ाज़िर हैं । मुझे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **मदीनए त़य्यिबा** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हुए हैं और मुझे मा'लूम तक नहीं । चुनान्चे मैं वहां से मुवा-जहा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझे नज़र नहीं आए, मैं वहां से फिर **"बाबुस्सलाम"** की त़रफ़ आया और जब सुनह्री जालियों की त़रफ़ देखा तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुवा-जहा शरीफ़ में ह़ाज़िर थे, लिहाज़ा मैं फिर सुनह्री जालियों के रू बरू ह़ाज़िर हुवा तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ग़ाइब थे । तीसरी[3] बार भी इसी त़रह़ हुवा । मैं समझ गया कि येह मह़बूब व मुह़िब का मुआ़-मला है, मुझे इस में मुख़िल नहीं होना चाहिये । **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِيَ عَنْه के मुर्शिदे करीम क़ुत़्बे

मदीना رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की भी गवाही ह़ासिल हो गई कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बात़िनी त़ौर पर मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ से मदीनतुर्रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ाज़िर हुए थे।

*ग़मे मुस्त़फ़ा जिस के सीने में है*
*गो कहीं भी रहे वोह मदीने में है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द बरेली से मदीना

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** आप ने देखा ? सुन्नियों के इमाम आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर हमारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर मेहरबान थे कि बिग़ैर किसी ज़ाहिरी सुवारी के **बरेली शरीफ़ से मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا बुला लिया करते थे। आ'ला ह़ज़रत तो आ'ला ह़ज़रत, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शहज़ादे पर भी कुछ कम करम नहीं था। चुनान्चे ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان के एक मुरीद व ज़िम्मादारे दा'वते इस्लामी ने मुझे ताजपूर शरीफ़ (नागपूर, हिन्द) से एक मक्तूब की फ़ोटो कॉपी इरसाल की उस में एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की कुछ इस त़रह़ की तह़रीर भी थी : 1409 सि.हि. में मेरे वालिदैन, बड़े भाईजान और भाभी साह़िबा को ह़ज की सआ़दत नसीब हुई, उन ह़ज़रात ने **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में दो बेह़द ईमान अफ़रोज़ मनाज़िर मुला-ह़ज़ा किये :

﴿1﴾ वालिदे मोह़तरम ने रौज़ए अन्वर के क़रीब येह रूह़ परवर मन्ज़र देखा कि सरकारे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن ह़स्बे मा'मूल सरे अक़्दस पर इमामा शरीफ़ का ताज

सजाए, चांद सा चेहरा चमकाते अपने मख़्सूस म-दनी क़ाफ़िले के हमराह तशरीफ़ फ़रमा हैं ! बड़ी हैरानी हुई कि हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को विसाल किये हुए तक़रीबन आठ साल गुज़र चुके हैं यहां कैसे जल्वा नुमाई फ़रमा रहे हैं ! हैरत व मसर्रत के मिले जुले जज़्बात के साथ अपने बड़े बेटे (या'नी मेरे बड़े भाई) को येह ख़बर देने ढूंडने निकले, जब बड़े बेटे से मुलाक़ात हुई तो पता चला वोह भी वालिद साहिब को ढूंड रहे थे, क्यूं कि उन्हों ने भी येह मन्ज़र देख लिया था, चुनान्चे अब दोनों दोबारा उसी मक़ाम पर आए तो सरकारे मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मअ़ म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़ ले जा चुके थे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

## आक़ा के क़दमों में मौत

﴿2﴾ दूसरा क़ाबिले सद रश्क मन्ज़र येह देखा कि एक दराज़ क़द, तनू मन्द नौ जवान सरकारे दो जहान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्ताने अ़र्श निशान पर ह़ाज़िर था और क़-दमैने शरीफ़ैन में हाथ उठा कर दुआ मांग रहा था कि यकायक गिरा और सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों पर निसार हो गया ! वालिद साहिब ने बताया कि लोगों की भीड़ लग गई, मुख़्तलिफ़ुल्लिसान मुसल्मान अपनी अपनी ज़बान में उस ख़ुश नसीब नौ जवान की ईमान अफ़्रोज़ मौत पर रश्क कर रहे थे । आह काश !

*यूं मुझ को मौत आए तो क्या पूछना मेरा*
*मैं ख़ाक पर निगाह दरे यार की त़रफ़*

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

# फांसी घर से अपने घर तक

**आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن के एक मुरीद अमजद अ़ली ख़ान क़ादिरी र-ज़वी शिकार के लिये गए । उन्हों ने जब शिकार पर गोली चलाई तो निशाना ख़त़ा हो गया और गोली किसी राहगीर को लगी जिस से वोह हलाक हो गया, पोलीस ने गरिफ़्तार कर लिया, कोर्ट में क़त्ल साबित हो गया और फांसी की सज़ा सुना दी गई । अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा तारीख़ से पहले रोते हुए मुलाक़ात के लिये पहुंचे तो अमजद अ़ली साह़िब कहने लगे : आप सब मुत़्मइन रहिये मुझे फांसी नहीं हो सकती क्यूं कि मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़्वाब में आ कर मुझे येह बिशारत दे दी है : "हम ने आप को छोड़ दिया।" रो धो कर लोग चले गए। फांसी की तारीख़ वाले रोज़ मामता की मारी मां रोती हुई अपने लाल का आख़िरी दीदार करने पहुंची । سُبْحٰنَ الله سُبْحٰنَ الله अपने मुर्शिद पर ए'तिक़ाद हो तो ऐसा ! मां की ख़िदमत में भी बड़े ए'तिमाद से अ़र्ज़ कर दी : "मां आप रन्जीदा न हों, घर जाइये, اِنْ شَآءَالله आज का नाश्ता मैं घर आ कर ही करूंगा।" वालिदा के जाने के बा'द अमजद अ़ली को फांसी के तख़्ते पर लाया गया, गले में फन्दा डालने से पहले ह़स्बे दस्तूर जब आख़िरी आरज़ू पूछी गई तो कहने लगे : "क्या करोगे पूछ कर ? अभी मेरा वक़्त नहीं आया।" वोह लोग समझे कि मौत की दहशत से दिमाग़ फ़ेल हो गया है ! चुनान्चे फांसीगर ने फन्दा गले में पहना दिया कि तार आ गया : मलिका विक्टोरिया की ताजपोशी की ख़ुशी में इतने क़ातिल और इतने क़ैदी छोड़ दिये जाएं । फ़ौरन फांसी का फन्दा निकाल कर उन को तख़्ते से उतार कर रिहा कर दिया गया । उधर घर पर कोहराम मचा हुवा था और लाश लाने का इन्तिज़ाम हो रहा था कि अमजद अ़ली क़ादिरी र-ज़वी साह़िब फांसी

घर से सीधे अपने घर आ पहुंचे और कहने लगे : नाश्ता लाइये ! मैं ने कह जो दिया था कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नाश्ता घर आ कर करूंगा । (तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 100, बि तसर्रुफ़िन, ब-रकाती पब्लीशर्ज़, बाबुल मदीना कराची) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

*आहें दिले असीर से लब तक न आई थीं*
*और आप दौड़े आए गरिफ़्तार की त़रफ़*

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## मुश्किल कुशा का दीदार

**बा'ज़** इस्लामी भाइयों को बाबुल मदीना कराची के एक **मुअ़म्मर** कातिब अ़ब्दुल माजिद बिन अ़ब्दुल मालिक पीलीभीती ने येह ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ सुनाया : मेरी उ़म्र उस वक़्त तेरह[13] बरस थी, मेरी सोतेली वालिदा का ज़ेह्नी तवाज़ुन ख़राब हो गया था, उन को ज़न्जीरों में जकड़ कर छत पर रखा जाता था, बहुत इ़लाज करवाया मगर इफ़ाक़ा न हुवा । किसी के मश्वरे पर मैं और मेरे वालिद साह़िब वालिदा को ज़न्जीरों में जकड़ कर जूं तूं पीलीभीत से **बरेली शरीफ़** लाए, वालिदए मोह़-त-रमा मुसल्सल गालियां बके जा रही थीं । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को देखते ही गरज कर कहा : तुम कौन हो ? यहां क्यूं आए हो ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन्तिहाई नरमी से फ़रमाया : मोह़-त-रमा ! आप की बेहतरी के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं । वालिदा ब दस्तूर गरज कर बोलीं : बड़े आए बेहतरी करने वाले ! जो चाहती हूं वोह बेहतरी कर दोगे ? फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । वालिदा ने कहा :

"**मौला अ़ली मुश्किल कुशा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का दीदार करवा दो !" येह सुनते ही आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने शानए मुबारक से चादर शरीफ़ उतार कर अपने चेहरए मुबारक पर डाली और मअ़न (या'नी फ़ौरन) हटा ली। अब हमारी नज़रों के सामने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नहीं बल्कि **मौला अ़ली मुश्किल कुशा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपना चेहरा चमकाते खड़े थे। हमारी बूढ़ी वालिदा निहायत सन्जी-दगी के साथ जल्वों में गुम थीं, मैं ने और वालिदे मोह़तरम ने भी ख़ूब जी भर कर जागती आंखों से **मौला अ़ली मुश्किल कुशा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ज़ियारत की। फिर **मौला अ़ली मुश्किल कुशा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपनी चादरे मुबारक अपने चेहरे पर डाल कर हटाई तो अब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमारे सामने **मु-तबस्सिम** (या'नी मुस्कराते) खड़े थे। फिर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शीशी में दवा अ़ता फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : दो[2] ख़ूराक दवा है, एक ख़ूराक मरीज़ा को देना अगर ज़रूरत मह़सूस न हो तो दूसरी ख़ूराक हरगिज़ मत देना। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! हमारी वालिदा सिर्फ़ एक ख़ूराक (या'नी Dose) में तन्दुरुस्त हो गई जब तक ज़िन्दा रहीं कोई दिमाग़ी ख़राबी न हुई। **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

*क़िस्मत में लाख पेच हों सो बल हज़ार कज*
*येह सारी गुथ्थी इक तेरी सीधी नज़र की है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# बा ब-र-कत चवन्नी

**एक** बार आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن को ह़ाजियों के इस्तिक़्बाल के लिये बन्दर गाह जाना था, तै़ शुदा सुवारी को आने में ताख़ीर हो गई तो एक इरादत मन्द ग़ुलाम नबी मिस्त्री बिग़ैर पूछे तांगा लेने चले गए। जब तांगा ले कर पलटे तो दूर से देखा कि सुवारी आ चुकी है लिहाज़ा तांगे वाले को चवन्नी (एक रुपै का चौथाई ह़िस्सा) दे कर रुख़्सत किया। इस वाक़िए़ का किसी को इ़ल्म नहीं था। चार[4] रोज़ के बा'द मिस्त्री साह़िब बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه में ह़ाज़िर हुए तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन्हें एक चवन्नी अ़ता फ़रमाई। पूछा : कैसी है ? फ़रमाया : उस रोज़ तांगे वाले को आप ने दी थी। मिस्त्री साह़िब ह़ैरान हो गए कि मैं ने किसी से इस बात का मुत़्लक़ तज़्किरा नहीं किया फिर भी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को मा'लूम हो गया। इन्हें इस त़रह़ सोच में डूबा हुवा देख कर ह़ाज़िरीन ने कहा : मियां बा ब-र-कत चवन्नी क्यूं छोड़ते हो ! तबर्रुक के त़ौर पर रख लो। उन्हों ने रख ली। जब तक वोह बा ब-र-कत चवन्नी उन के पास रही कभी पैसों में कमी न हुई। (मुलख़्ख़स अज़ ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 260, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम !*
*हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# क़ैद से छूट तो गए.....!

**एक** बुढ़िया जो आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की मुरी-दनी थीं। उन के शोहर पर क़त्ल का मुक़द्दमा दाइर हो कर सज़ा का हुक्म हो गया था कि पांच हज़ार जुर्माना और बारह साल क़ैद। इस की अपील की गई। जब से अपील हुई थी उन का बयान है कि मैं रोज़ाना आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करती थी। फ़ैसले की तारीख़ से चन्द रोज़ क़ब्ल बड़ी बी पर्दे में लिपटी हुई बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه में फ़रियाद ले कर ह़ाज़िर हुईं। फ़रमाया : कसरत से حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ पढ़िये। वोह चली गईं। दरमियान में कई बार ह़ाज़िर हुईं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वोही फ़रमा दिया करते। यहां तक कि फ़ैसले की तारीख़ आ गई। ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर! आज फ़ैसला होना है। फ़रमाया : "वोही पढ़िये।" बड़ी बी वोही पुराना जवाब सुन कर कुछ ख़फ़ा सी हो गईं और येह बुड़बुड़ाते हुए चल दीं कि जब अपना पीर ही नहीं सुनता तो दूसरा कौन सुनेगा! जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह कैफ़िय्यत देखी तो फ़ौरन आवाज़ दे कर बड़ी बी को बुला लिया और फ़रमाया : पान खा लीजिये, बड़ी बी ने अ़र्ज़ की : मेरे मुंह में पान मौजूद है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इसरार किया लेकिन वोह कुछ नाराज़ सी थीं। फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने दस्ते मुबारक से पान बढ़ाते हुए फ़रमाया : **छूट तो गए** अब तो पान खा लीजिये! अब बड़ी बी ने ख़ुश हो कर पान खा लिया और घर की त़रफ़ चल दीं। जब घर के क़रीब पहुंचीं तो बच्चे दौड़े हुए आए और कहने लगे : आप कहां थीं? तार वाला ढूंडता फिर रहा है, ख़ुशी में घर गईं तार लिया और पढ़वाया तो मा'लूम हुवा शोहर साह़िब बरी हो गए हैं। (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 3, स. 202) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े**

**हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर*
*येह तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है*

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बीमारे बख़्त बेदार

**सय्यिद** क़नाअ़त अ़ली शाह साहिब कमज़ोर दिल के थे । एक बार किसी मरीज़ के ख़त़रनाक ऑपरेशन की तफ़्सील सुन कर सदमे से बेहोश हो गए, लाख जतन किये गए लेकिन होश न आया । आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में दर-ख़्वास्त पेश की गई । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सय्यिद ज़ादे के सिरहाने तशरीफ़ लाए । **निहायत ही शफ़्क़त के साथ उन का सर अपनी गोद में लिया और अपना मुबारक रुमाल उन के चेहरे पर डाला कि फ़ौरन होश आ गया और आंखें खोल दीं ।** ज़माने के वली की गोद में अपना सर देख कर झूम गए ता'ज़ीम की ख़ातिर उठना चाहा मगर कमज़ोरी के सबब न उठ सके । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*सरे बालीं इन्हें रह़मत की अदा लाई है*
*ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है*

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## दिल की बात जान ली

**मदीनतुल** मुर्शिद बरेली शरीफ़ में एक साहिब थे जो बुज़ुर्गाने दीन को **अहम्मिय्यत** न देते थे और पीरी मुरीदी को पेट का ढकोस्ला

कहते थे । उन के ख़ानदान के कुछ अफ़राद आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن से बैअ़त थे । वोह लोग एक दिन किसी त़रह़ से बहला फुसला कर इन को आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत के लिये ले चले । रास्ते में एक ह़ल्वाई की दुकान पर गर्म गर्म अमरितियां (माश के आटे की मिठाई जो जलेबी के मुशाबेह होती है) तली जा रही थीं, देख कर इन साह़िब के मुंह में पानी आ गया । कहने लगे : ''येह खिलाओ तो चलूंगा ।'' उन ह़ज़रात ने कहा कि वापसी में खिलाएंगे पहले चलो । बहर ह़ाल सब लोग आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए । इतने में एक साह़िब गर्म गर्म अमरितियों की टोकरी ले कर ह़ाज़िर हुए, फ़ातिह़ा के बा'द सब को तक़्सीम हुई । दरबारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ाइ़दा था कि सादाते किराम और दाढ़ी वालों को दुगना ह़िस्सा मिलता था, चूंकि इन साह़िब की दाढ़ी नहीं थी लिहाज़ा इन को एक ही अमरिती मिली । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि इन को दो[2] दीजिये । तक़्सीम करने वाले ने अ़र्ज़ की : ह़ुज़ूर ! इन के दाढ़ी नहीं है । आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुस्करा कर फ़रमाया : ''इन का दिल चाह रहा है, एक और दीजिये ।'' येह करामत देख कर वोह आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुरीद हो गए । और बुज़ुर्गाने दीन की ता'ज़ीम करने लगे । (तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 101) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*दिल की जो बात जान ले रोशन ज़मीर है*
*उस ह़ज़रते रज़ा को हमारा सलाम हो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## बारिश बरसने लगी

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की ख़िदमत

में एक नुजूमी ह़ाज़िर हुवा, आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : कहिये, आप के ह़िसाब से बारिश कब आनी चाहिये ? उस ने ज़ाएचा बना कर कहा : ''इस माह में पानी नहीं आयन्दा माह में होगी।'' आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर बात पर क़ादिर है वोह चाहे तो आज ही बारिश बरसा दे । आप सितारों को देख रहे हैं और मैं सितारों के साथ साथ सितारे बनाने वाले की क़ुदरत को भी देख रहा हूं । दीवार पर घड़ी लगी हुई थी आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नुजूमी से फ़रमाया : कितने बजे हैं ? अ़र्ज़ की : सवा ग्यारह । फ़रमाया : बारह[12] बजने में कितनी देर है ? अ़र्ज़ की : पौन घन्टा । फ़रमाया : पौन घन्टे से क़ब्ल बारह[12] बज सकते हैं या नहीं ? अ़र्ज़ की : नहीं, येह सुन कर आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उठे और घड़ी की सूई घुमा दी, फ़ौरन टन टन बारह[12] बजने लगे । नुजूमी से फ़रमाया : आप तो कहते थे कि पौन घन्टे से क़ब्ल बारह[12] बज ही नहीं सकते । तो अब कैसे बज गए ? अ़र्ज़ की : आप ने सूई घुमा दी वरना अपनी रफ़्तार से तो पौन घन्टे के बा'द ही बारह[12] बजते । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़्लक़ है कि जिस सितारे को जिस वक़्त चाहे जहां चाहे पहुंचा दे । आप आयन्दा माह बारिश होने का कह रहे हैं और मेरा रब عَزَّوَجَلَّ चाहे तो आज और अभी बारिश होने लगे । ज़बाने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इतना निकलना था कि चारों त़रफ़ से घन्घोर घटा छा गई और झूम झूम कर बारिश बरसने लगी । (अन्वारे रज़ा, स. 375, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़, मर्कज़ुल औलिया लाहोर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*मौत नज़्दीक गुनाहों की तहें मैल के ख़ौल*
*आ बरस जा कि नहा धो ले येह प्यासा तेरा*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## मज़दूर शहज़ादा

**मदीनतुल** मुर्शिद बरेली शरीफ़ के किसी मह़ल्ले में आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن मद्ज़ू़ थे । इरादत मन्दों ने अपने यहां लाने के लिये पालकी का एहतिमाम किया । चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه सुवार हो गए और चार[4] मज़दूर पालकी को अपने कन्धों पर उठा कर चल दिये । अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि यकायक इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पालकी में से आवाज़ दी : "पालकी रोक दीजिये" पालकी रुक गई । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़ौरन बाहर तशरीफ़ लाए और भर्राई हुई आवाज़ में मज़दूरों से फ़रमाया : सच सच बताइये आप में सय्यिद ज़ादा कौन है ? क्यूं कि मेरा ज़ौक़े ईमान सरवरे दो[2] जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू मह़सूस कर रहा है, एक मज़दूर ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं सय्यिद हूं । अभी उस की बात मुकम्मल भी न होने पाई थी कि आ़लमे इस्लाम के मुक़्तदर पेशवा और वक़्त के अ़ज़ीम मुजद्दिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना इमामा शरीफ़ उस सय्यिद ज़ादे के क़दमों में रख दिया । इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की आंखों से टप टप आंसू गिर रहे हैं और हाथ जोड़ कर इल्तिजा कर रहे हैं : मुअ़ज़्ज़ज़ शहज़ादे ! मेरी गुस्ताख़ी मुआ़फ़ कर दीजिये, बे ख़याली में मुझ से भूल हो गई, हाए ग़ज़ब हो गया ! जिन की ना'ले पाक मेरे सर का ताजे इ़ज़्ज़त है, उन (या'नी शहज़ादे) के कांधे पर मैं ने सुवारी की, अगर बरोज़े क़ियामत ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछ लिया कि अह़मद

रज़ा ! क्या मेरे फ़रज़न्द का दोशे नाज़नीन इस लिये था कि वोह तेरी सुवारी का बोझ उठाए ? तो मैं क्या जवाब दूंगा ! उस वक़्त मैदाने महशर में मेरे नामूसे इश्क़ की कितनी ज़बर दस्त रुस्वाई होगी। कई बार ज़बान से मुआ़फ़ कर देने का इक़रार करवा लेने के बा'द इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आख़िरी इल्तिजाए शौक़ पेश की : मोहतरम शहज़ादे ! इस ला शुऊ़री में होने वाली ख़त़ा का कफ़्फ़ारा जभी अदा होगा कि अब आप पालकी में सुवार होंगे और मैं पालकी को कांधा दूंगा। इस इल्तिजा पर लोगों की आंखों से आंसू बहने लगे और बा'ज़ की तो चीख़ें भी बुलन्द हो गईं। हज़ार इन्कार के बा'द आख़िर कार **मज़दूर शहज़ादे** को पालकी में सुवार होना ही पड़ा। येह मन्ज़र किस क़दर दिलसोज़ है, अहले सुन्नत का जलीलुल क़द्र इमाम मज़दूरों में शामिल हो कर अपनी ख़ुदादाद इल्मिय्यत और आ़लमगीर शोहरत का सारा ए'ज़ाज़ ख़ुश्नूदिये महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातिर एक गुमनाम **मज़दूर शहज़ादे** के क़दमों पर निसार कर रहा है ! (अन्वारे रज़ा, स. 415) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का*
*तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## दुन्यवी ज़ुलूम में महारत की नादिर ह़िकायत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जिस की उल्फ़ते आले रसूल की येह ह़ालत हो उस के इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का कौन अन्दाज़ा कर सकता है ! **इमामे** अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जहां एक आ़शिक़े रसूल और

बा करामत वली थे वहीं एक ज़बर दस्त आ़लिमे दीन भी थे, कमो बेश पचास[50] उ़लूम पर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कामिल दस्त-रस (या'नी महारत) ह़ासिल थी । दीनी उ़लूम की ब-र-कत से दुन्यवी उ़लूम ख़ुद आगे बढ़ कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के क़दम चूमते थे । इस ज़िम्न में एक ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये । चुनान्चे **अ़लीगढ़** मुस्लिम यूनीवर्सिटी के वाइस चान्सलर डॉक्टर सर ज़ियाउद्दीन ने यूरोप में ता'लीम ह़ासिल की थी और बर्रे सग़ीर के सफ़े अव्वल के रियाज़ी दानों में से एक थे । इत्तिफ़ाक़ से रियाज़ी के एक मस्अले में इन को मुश्किल पेश आई, बहुतेरा सर खपाया मगर ह़ल समझ में न आया । चुनान्चे **जर्मनी** जा कर इस मस्अले को ह़ल करने का क़स्द किया । ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद सुलैमान अशरफ़ साह़िब क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی उस दौर में यूनीवर्सिटी के शो'बए दीनियात के नाज़िम थे । उन्हों ने डॉक्टर साह़िब को मश्वरा दिया बल्कि इसरार किया कि आप जर्मनी जाने की तक्लीफ़ उठाने के बजाए यहां से चन्द घन्टे का सफ़र कर के बरेली शरीफ़ चल कर इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से अपना मस्अला ह़ल करवा लीजिये । डॉक्टर साह़िब ने ह़ैरत से कहा कि आप क्या कह रहे हैं ! क्या येह रियाज़ी का मस्अला कोई ऐसा मौलाना भी ह़ल कर सकता है जिस ने कभी कॉलेज का मुंह तक न देखा हो, ना बाबा ! बरेली शरीफ़ जा कर अपना वक़्त ज़ाएअ़ नहीं कर सकता । मगर सय्यिद सुलैमान शाह साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पैहम इसरार पर वोह उन के साथ मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर हो गए । इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में ह़ाज़िरी दी । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़बीअ़त नासाज़ थी लिहाज़ा डॉक्टर साह़िब ने अ़र्ज़ की : मौलाना ! मेरा मस्अला बेह़द पेचीदा है, एक दम दरयाफ़्त करने जैसा नहीं, ज़रा इत़्मीनान की सूरत हो तो अ़र्ज़ करूं । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने

फ़रमाया : आप बयान कीजिये । डॉक्टर साहिब ने मस्अला पेश किया इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन उस का जवाब इर्शाद फ़रमा दिया, जवाब सुन कर डॉक्टर साहिब सक्ते में आ गए और बे इख़्तियार बोल उठे कि आज तक **इल्मे लदुन्नी** (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से बराहे रास्त मिलने वाले इल्म) का सुनते तो थे मगर आज आंखों से देख लिया । मैं तो इस मस्अले के ह़ल के लिये जर्मनी जाने का अ़ज़्म बिल जज़्म कर चुका था मगर ह़ज़रते मौलाना सय्यिद सुलैमान अशरफ़ क़ादिरी र-ज़वी साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरी रहबरी फ़रमाई । इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना एक क़-लमी रिसाला मंगवाया जिस में अक्सर **मुसल्लसों** और दाएरों की शक्लें बनी हुई थीं, डॉक्टर साहिब बहूरे ह़ैरत में ग़रक़ हुए जा रहे थे । कहने लगे : मैं ने तो इस इ़ल्म को ह़ासिल करने के लिये मुल्क ब मुल्क सफ़र किया, बड़ा रुपिया ख़र्च किया, यूरोपियन असातिज़ा की जूतियां सीधी कीं तब कुछ मा'लूमात हुई मगर आप के इ़ल्म के आगे तो मैं मह्ज़ एक तिफ़्ले मक्तब (या'नी मद्रसे का बच्चा) हूं । येह तो इर्शाद फ़रमाइये, इस फ़न में आप का उस्ताद कौन है ? फ़रमाया : कोई उस्ताद नहीं । अपने वालिदे माजिद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से चार क़ाइदे जम्अ़, तफ़रीक़, ज़र्ब और तक़्सीम इस लिये सीखे थे कि तर्के (या'नी विरासत) के मसाइल में इन की ज़रूरत पड़ती है । शर्ह़े **चुग़्मीनी** शुरूअ़ ही की थी कि वालिद साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : क्यूं वक़्त ज़ाएअ़ करते हो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार से येह उ़लूम तुम को ख़ुद ही सिखा दिये जाएंगे । चुनान्चे आप जो कुछ मुला-ह़ज़ा फ़रमा रहे हैं येह सब सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही का करम है ।

*मसाइल ज़ीस्त के जितने भी थे पेचीदा पेचीदा*
*नबी के इ़श्क़ ने ह़ल कर दिये पोशीदा पोशीदा*

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

**डॉक्टर** सर ज़ियाउद्दीन साहिब पर इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जलालते इल्मी और ख़ुश ख़ुल्क़ी का इस क़दर असर हुवा कि उन्हों ने सौम व सलात की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी और चेहरे पर दाढ़ी मुबारक भी सजा ली । (मुलख़्ख़स अज़ ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 222, 229) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

*निगाहे वली में वोह तासीर देखी  बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !  صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## मन्क़बते आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

तूने बात़िल को मिटाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा  दीन का डंका बजाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
दौरे बात़िल और ज़लालत हिन्द में था जिस घड़ी  तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
अहले सुन्नत का चमन सर सब्ज़ था शादाब था  और रंग तुम ने चढ़ाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
तूने बात़िल को मिटा कर दीन को बख़्शी जिला  सुन्नतों को फिर जिलाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
ऐ इमामे अहले सुन्नत ! नाइबे शाहे उमम !  कीजिये हम पर भी साया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
इल्म का चश्मा हुवा है मोज-ज़न तह़रीर में  जब क़लम तूने उठाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
ह़श्र तक जारी रहेगा फ़ैज़ क्यूं कि तुम ने है  फ़ैज़ का दरिया बहाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

है ब दरगाहे ख़ुदा अ़त्तारे आ़जिज़ की दुआ़
तुम पे हो रह़मत का साया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !  صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

*येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये*

शादी ग़मी की तक़्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
का पड़ोस

18 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1427 सि.हि.
**19-3-2006**